सौ दिन में पककर तैयार होगी अरहर

आईआईपीआर के स्थापना दिवस पर पुस्तक विमोचन करते उप महानिदेशक (फसल विज्ञान) डा. जेएस संधू, सीएसए कुलपति प्रो. एसएल गोस्वामी, निदेशक डा. एनपी सिंह।

कानपुर : दलहनी फसलों के उत्पादन में एक दशक में आयी कमी से चिंतित वैज्ञानिकों ने अरहर की ऐसी प्रजातियां विकसित की हैं जो 100 दिन में पककर तैयार हो जाएंगी। वैज्ञानिकों ने अरहर की ऐसी पांच प्रजातियां विकसित की हैं।

भारतीय दलहन अनुसंधान संस्थान के 23वें स्थापना दिवस के मौके पर मुख्य अतिथि भारतीय कृषि अनुसंधान परिषद के उप महानिदेशक (फसल विज्ञान) डा. जीत सिंह संधू ने बताया कि अरहर की प्रजातियों पर अनुसंधान पूरा हो चुका है। आमतौर पर अरहर की फसल निम्न, मध्यम व उच्च अवधि की होती है। इन्हें विकसित होने में क्रमशः 160, 180 व 200 दिन से अधिक लगते हैं लेकिन अब जो प्रजातियां विकसित की गई हैं वे 100 दिन में पककर तैयार हो जाएंगी। डा. संधू ने बताया कि पूर्वी क्षेत्र में इन्हें दिसंबर माह में बोया जा सकेगा। इन प्रजातियों से कम समय में अधिक उत्पादन मिलेगा। वह मानते हैं कि पिछले कुछ वर्षों में दलहनों के उत्पादन में 10 फीसद तक कमी आयी है। जबकि इस बीच आबादी कई गुना बढ़ चुकी है। उन्होंने बताया कि लंबी अवधि की अरहर में कीट लग जाते हैं जिससे फसल खराब हो जाती है लेकिन कम समय की फसल में कीट लगने की संभावना न के बराबर होगी। कार्यक्रम के दौरान आईआईपीआर के प्रकाशित बुलेटिन प्राइमर ऑन मार्डन टूल्स ऑफ बायोटेक्नोलॉजी का विमोचन भी किया गया।

लोबिया व कुलथी पर भी होगी रिसर्च

आईआईपीआर कानपुर के निदेशक डा. एनपी सिंह ने बताया कि अब वैज्ञानिकों का शोध केवल दालों तक सीमित नहीं रहेगा। इस वर्ष से यहां के वैज्ञानिक लोबिया, कुलथी, हर्षग्राम व ग्वार पर भी शोध करेंगे। इन्हें हम दालें कम सब्जी कह सकते हैं। इन पर की जाने वाली शोध का लाभ आर्थिक रूप से कमजोर लोगों को सर्वाधिक होगा क्योंकि ये दालों की तुलना में सस्ते होते हैं।

जैन इरीगेशन सिस्टम्स लिमिटेड

फार्च्यून की दुनियां बदलने वाली एकमात्र भारतीय कम्पनी

मुम्बईः जैन इरिगेशन सिस्टम्स लिमिटेड, एकमात्र भारतीय कम्पनी है जिसने फार्च्यून की दुनियां बदलने वाली 51 भारतीय कम्पनियों की सूची में स्थान प्राप्त किया है। विशेष बात यह है कि कम्पनी को इस सूची में वोडाफोन सफारी कॉम, गूगल, टोयोटा, वाल्मार्ट, एनेल यूटिलिटिज व जीएसके के बाद 7 वां स्थान पाया है। सूची में अन्य प्रमुख कम्पनियों जैसे सिसको, फेसबुक, मास्टरकार्ड, स्टारबक्स, नाइके, फोर्ड मोटर, यूनिलीवर, आइबीएम आदि का समावेश है।

'फार्च्यून' की इस दुनिया परिवर्तन की सूची का मुख्य आशय उन कम्पनियों को चिन्हित एवं रेखांकित करना है जिन्होंने सामाजिक उन्नति व समस्याओं के निराकरण को अपनी मुख्य व्यावसायिक रणनीति का महत्वपूर्ण भाग माना है। यह इस विश्वास पर आधारित है कि पूंजीवाद बर्दाश्त नहीं बल्कि कुछ अच्छा कर सकने की शक्ति के लिए मनाया जाना चाहिए। ऐसे समय जबकि सरकारें असफल हो रही हैं, उनको पहले से और ज्यादा अधिकारों की आवश्यकता है।

चयनित कम्पनियों की, वैश्विक सामाजिक या वातावरणीय समस्याओं के संदर्भ में वृहद प्रभावी प्रतिस्पर्धात्मक रणनीति रही है। इनके मूल्यांकन में फार्च्यून ने चार मानदंड - 1. व्यापार में शामिल नवाचार का स्तर, 2. महत्वपूर्ण सामाजिक चुनौती पर गणनात्मक प्रभाव, 3. कम्पनी की लाभ प्रदत्ता पर प्रतिस्पर्धा के साथ साक्ता-मूल्य की गतिविधियों में योगदान, 4. समग्र व्यापार करने के लिए साक्ता-मूल्य के प्रयास का महत्व।

श्री भंवरलाल जैन, कम्पनी के संस्थापक चेयरमैन कहते है कि फार्च्यून की दुनियां बदलने वाली

कम्पनियों में हमारी कम्पनी का समावेश होना बड़े सम्मान की बात है। हमारी टीम के दशकों के जोश, निष्ठा और छोटे-छोटे कृषकों के साथ कार्य करने की लगन का यह प्रतिफल है। कृषक की समृद्धि-हमारी समृद्धि सफलता का आधार रहा है। वे आगे कहते हैं कि कम्पनी का ध्येय वाक्य ''दुनियां को जैसे हमने पाया, उससे बेहतर स्थिति में छोड़े'' इसके लिए हम एक ओर किसानों की आय एवं आत्मविश्वास बढ़ाते हुए और दूसरी ओर अमूल्य प्राकृतिक संसाधनों की रक्षा करते हुए प्रयासरत है। इससे सामाजिक वातावरण संरक्षण सुनिश्चत होता है। हमारी सभी व्यावसायिक गतिविधियां राष्ट्रीय प्राधान्यता के साथ ही वैश्विक पहुंच में है। यह हमारा दृढ विश्वास है कि इस भावना के साथ हम विकास के लिए एक अभूतपूर्व संभावित कल्पना लाखों छोटे-छोटे किसानों तथा अन्य हित धारकों के लिए कर सकते है। इस सम्मान और दर्जे को हम पूर्ण दायित्व की अनुभूति के साथ संजोये रखेंगे।

सवाल आपके - जवाब हमारे

धान की पत्तियों में आधार पीला पड़ रहा है और उन पर कुछ-कुछ लाल बादमी रंग के चकत्ते दिख रहे हैं, उचित उपचार बताइये। गौरव राजपूत, कानपुर देहात

यह फसल में खैरा रोग के लक्षण प्रतीत होते हैं। इसके लिए आप खेत में 5 किग्रा. जिंक सल्फेट एवं 2.5 किग्रा. बुझे हुए चूने को 600-700 लीटर पानी में घोलकर प्रति हेक्टेयर की दर से खड़ी फसल में छिड़काव करें। रोग नियंत्रित हो जायेगा।

मधुमक्खी पालन व्यवसाय प्रारम्भ करना चाहता हूं। किस प्रकार से प्रारम्भ करें? प्रशिक्षण कहां से प्राप्त किया जा सकता है? शिवचरण, कन्नौज

आप प्रारम्भ में 5-6 मधुमक्खी बक्सों/घरों से व्यवसाय प्रारम्भ कर सकते हैं। तकनीकी जानकारी एवं प्रशिक्षण आदि के लिए जनपद के जिला उद्यान अधिकारी से सम्पर्क कर पूर्ण जानकारी प्राप्त कर व्यवसाय प्रारम्भ करें।

राजमा की बुवाई का उचित समय क्या है? अधिक उपज देने वाली प्रजातियों के नाम बताइये तथा एक एकड़ में कितना बीज आवश्यक होगा। बृजेश तिवारी, इटावा

राजमा की बुवाई का उचित समय अक्टूबर माह है। एक एकड़ में बुवाई हेतु 50 किग्रा. बीज पर्याप्त रहता है। इसकी अम्बर, उदय, मालवीय, काशी कंचन आदि उपयुक्त अधिक उपज देने वाली प्रजातियां है।

पपीते की अधिक उपज देने वाली प्रजातियों के नाम बताइये तथा इसकी पौध को कब रोपित करें। बीज दर कितनी रहती है। पवन कुमार, उन्नाव

पपीता की सूर्या, रेड लेडी, पूसा मैजेस्टी, पंत पपीता-1, पूसा ड्वार्फ आदि किस्मों की आप रोपण में प्रयोग कर सकते हैं। इसके अतिरिक्त प्राइवेट कम्पनियों के भी हाइब्रिड बीज प्रयोग में ला सकते हैं। एक हेक्टेयर में 250-300 ग्राम बीज पर्याप्त रहता है तथा पौध रोपण का उचित समय सितम्बर-अक्टूबर माह है। रोपण के बाद हल्की सिंचाई अवश्य कर दें।

लौकी में फल लग रहे है लेकिन कुछ आकार में बढ़ने के बाद वह सिकुड़ कर सूख से रहे है। अधिकांश फलों में यह समस्या है। उचित उपचार बताइये। रामकृष्ण, कानपुर

यह फसल में फल मक्खी के प्रभाव का असर है जो नये विकसित फलों में उनके निषेचन के समय ही अंडे दे देती है जो बाद में विकसित होकर अंदर से फलों को खाते हैं जिससे फल सिकुड़कर सूखने लगते है। उपचार हेतु किसी सिस्टेमेटिक कीटनाशी का तुरंत छिड़ाकव करें।

राई सरसों की शीघ्र बुवाई हेतु उचित प्रजातियों को बताइये जिससे इसके बाद गेहूं की फसल ली जा सके। शिवकुमार, आगरा

राई सरसों की बुवाई आप सितम्बर के द्वितीय पखवारे में कर दें इसके लिए नरेन्द्र अगेती राई-4, क्रांति, भवानी, टाइप-9 आदि कम समय में पकने वाली, शीघ्र बुवाई हेतु संस्तुत प्रजातियां है। जिनका प्रयोग आप बुवाई में कर सकते हैं।

गेंदा की एक एकड़ में खेती करना चाहता हूं। इसके लिए कौन-कौन सी प्रजातियां उपयुक्त रहेंगी तथा बीज कितना लगेगा? राजकुमार, फतेहपुर

गेंदे में अफ्रीकन गेंदा पीले व नारंगी रंग के पुष्पों के लिए उगाते हैं। इसकी गोल्डन जुबली, डबल आरेंज, पूसा बसंती, पूसा नारंगी, यलो सुप्रीम आदि प्रजातियां है। इनके पौधे भी आकार में बड़े होते हैं। दूसरी किस्म को फ्रेंच गेंदा कहते है। इसके पौधे आकार व लम्बाई में छोटे, पुष्पों का रंग पीला, लाल, सुनहरा पीला, लाल धब्बेदार होता है। इसकी गोल्डन आरेन्ज, गोल्डन जेम, रेड हेम लेमनरिंग या अन्य कोई लोकल प्रजाति को बुवाई में प्रयोग कर सकते हैं। बुवाई का उचित समय सितम्बर-अक्टूबर माह है तथा एक एकड़ में 600-700 ग्राम बीज पर्याप्त है।

ग्लेडियोलस की बुवाई कब करें। इसके लिए कौन-कौन सी प्रजातियां प्रयोग करें तथा बीज कहां से मिलेगा? रविराज, फतेहपुर

आप ग्लेडियोलस की बुवाई सितम्बर के अंतिम सप्ताह से अक्टूबर माह तक सफलतापूर्वक 30×20 सेमी की दूरी पर कर सकते हैं। सपना, आस्कर, मनीषा, अप्सरा, शोभा, सुचित्रा, कावेरी आदि प्रजातियों का प्रयोग कर सकते हैं। कार्म एन.वी.आर.आई., लखनऊ से प्राप्त कर सकते हैं।

गुलाब के कलकतिया किस्म के पौधे रोपण करना चाहता हूं। पौधे कहां से प्राप्त करें तथा दूरी कितनी रखें? विपिन कुमार, औरैया

गुलाब लगाने का उचित समय अक्टूबर माह है। आप अक्टूबर माह में कृन्तन के उपरांत निकली लकड़ी से भी कटिंग तैयार कर पौधे स्वयं तैयार करके लगा सकते हैं या किसी सरकारी नर्सरी से भी खरीद सकते है। रोपण की दूरी 45×45 सेमी रखना उचित रहता है।

पातगोभी की खेती करना चाहता हूं, इसकी उन्नतशील प्रजातियां एवं पौध बुवाई का उचित समय बताइये। प्रमोद कुमार, मैनपुरी

पातगोभी की पौध आप अगस्त से सितम्बर माह में तैयार करके रोपाई सितम्बर से अक्टूबर माह में कर सकते हैं। इसकी गणेश, प्राइड आफ इण्डिया, गोल्डन एंकर, पूसा मुक्ता आदि उन्नतशील प्रजातियां है जिनको आप रोपण में प्रयोग कर सकते हैं।

आंवला का बगीचा लगा रखा है पिछले वर्ष फलों पर काले धब्बे बन गये थे। इस वर्ष ऐसा न हो इसके लिए उचित उपचार बताइये। जगदीश नारायण, इटावा

फलों पर काले धब्बों का बनना बोरान तत्व की कमी से होता है इसके लिए फलों की बढ़वार की अवस्था में ही 6-8 ग्राम बोरेक्स को एक लीटर पानी में घोलकर 15 दिनों के अंतराल पर 2-3 बार छिड़काव कर दें जिससे फल चमकदार होंगे।

प्रस्तुतिः डा. वी.के.त्रिपाठी
चन्द्रशेखर आजाद कृषि एवं प्रौद्यो. विश्वविद्यालय, कानपुर

सुधी पाठको से अनुरोध है कि यह अंक आपको कैसा लगा। यदि आपके पास खेती सम्बंधी कोई सवाल, जानकारी अथवा रोचक फोटो है तो हमें निम्न पते पर भेजें।

जागरण खेत खलिहान

जागरण प्रकाशन लिमिटेड, 2- सर्वोदय नगर, कानपुर - 208005